ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 248-249

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- II, Issues-24, YEAR- April-June-2022

# संजीव के कहानी साहित्य का मार्क्सवादी चिंतन

1. बनकर संतोष महादेव
2. प्रो0 डॉ0 सदानंद भोसले

1. पी–एच0डी0 शोध अध्येता, 2.शोध निर्देशक– अनुसंधान केन्द– हिंदी विभाग, सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविदयालय, पुणे (महराष्ट्र) भारत

Received-19.06.2022, Revised-23.06.2022, Accepted-27.06.2022 E-mail: rajbhashahqkolkata@gmail.com

***सारांश:–*** *संजीव नवे दशक के साहित्यकार है जिन्होंने अपने कहानी साहित्य के माध्यम से आज के समाज का यथार्थ एवं जीवन्त चित्र अपनी कहानियों के माध्यम से प्रस्तुत किया है। उनका कहानी साहित्य आज, हर प्रकार के समाज का, उनकी समस्याओं का जीवन्त दस्तावेज है। लेखक ने अपने कहानी साहित्य के माध्यम से हर वर्ग के समाज को वाणी देने का सफल प्रयास किया है। हर प्रकार की समस्या को कहानी में चित्रित कर पाठकों तक सफलता के साथ प्रस्तुत किया है।*

***कुंजीभूत शब्द– ईधन विविधता, बायोमॉस, अक्षय ऊर्जा, सगावेरी विकास, कृषि– अपशिष्ट, सोलर प्लांट, पाणी।***

कहानीकार ने अपने कहानी साहित्य के माध्यम से मार्क्सवाद से संबंधित मुद्दों पर कलम चलाकर मार्क्सवादी चिंतन प्रस्तुत किया है। समाज के पूँजीपति वर्ग, शोषित एवं पीड़ित वर्ग, जमींदार वर्ग, श्रमिक वर्ग तथा दीन दलित वर्ग आदि पर कलम चलाकर मार्क्सवादी चिंतन प्रस्तुत किया है। संजीव ने अपनी कहानियों के माध्यम से मार्क्सवाद से संबंधित लगभग सभी बिंदुओं पर कलम चलायी है। समाज के पूँजीपति वर्ग के वर्तन को लेकर अपनी कहानी 'तीस साल का सफरनामा' में लिखते है कि, "चन्द सालों पहले कानूनगो साहब का इक्का जब इस जगह आकर रुका था तो ऐसी ही लार बह चली थी लेकिन नम्बरदार ने ए. सी. ओ. को अछैबर सिंह के यहाँ, कानूनगो को रामखेलाबन यादव के यहाँ और दतर सरयू पाण्डे के यहाँ लगवा दिया तो बाकी लोग म्यूजिकल चेयर से पराजित खिलाड़ियों की तरह उदास हो गए। यहीं से शुरु होतो है भूमि–सुधार, यानी चकबन्दी की कहानी। पड़ताल हुई, मालियत तय हुई। फिर एक दिन फार्म नम्बर पाँच थमा दिया गया गाँव वालों को। तब से उजुरदारी और मुकद्दमें चल रहे हैं इस गाँव में। एक–एक आदमी पाँच–पाँच मुकद्दमों में उलझा पड़ा है। गाँव के सारे लोग गुण्डे बन गए है और ज़मीन की लूट शुरु हो गई है।"[1]

'टीस' कहानी में समाज के पूँजीपति वर्ग का यथार्थ चित्र प्रस्तुत किया है। जैसे. "अच्छा तो देखिए, रोड पर जा रहा है एक नम्बर का अजगर मुखिया पिनाकी महतो। जितना सरकारी पैसा और सामान गाँव के लिए मिलता है, सब साला के पेट में जाता है। पीछे–पीछे जा रहा है, 'उसका' लड़की पत्तो। ढेमना (धामिन) है ढेमना। बड़ा–बड़ा बी. डी. ओ., एस. डी. ओ. , कोलरी मैनेजर, ठेकेदार का पा (पैर) बाँध के दूध पी जाता। कपड़ा और मूदीखाना का दुकानदार सेठ लोग राजस्थान का पीवणा नाग है। सूबेदार रामबली राय गंगा के किनारे का चित्ती (करैत) है तो मुनीम जगेशर सिन्हा बोड़ा साँप है।"[2]

'धनुष टंकार' कहानी में पूँजीपति वर्ग यथार्थ व्यवहार रेखांकित किया है। जैसे– "तो क्या यह सारा ताम–झाम इसलिए है कि इन मजदूरों की दुकानें चलानेवाली युनियनों का कारोबार चलता रहे, बिना किसी स्थायी हल के, जीत के जश्न पर जै–जै कार होती रहे। सबसे ज्यादा श्रम देनेवाले ठेकेदार–मजुर सबसे कम वेतन और असुरक्षित नौकरी बनाए रखने के लिए पीछे–पीछे लगे रहें। इनको नोचते रहे ठेकेदार, नोचते रहें साहब। उनकी कमाई पर ऐश करते रहें स्थायी मस्टर रोल श्रमिक, ऐश करते रहें नेता, अफसर, ठेकेदार।"3

'भूखे–रीछ' कहानी में लेखक ने समाज के शोषित एवं पीड़ित वर्ग का यथार्थ चित्र प्रस्तुत किया है। जैसे– "रोज सुबह–शाम नल पर पाणी के लिए सर–फुटौवल करनी पड़ती। डी. सी. लाइन की तपेदिक–सी बीमार बिजली, ऐसी कि लालटेन जलाओ तो मुँह सुझे सामनेवाले का। और यहाँ...!चार–चार फालतू नलें! बीघे–भर की फुलवारी! रात को भी दिन बनाए हुए मुत की बिजली के ढेर सारे बल्बा!"[4]

'नेता' कहनी में समाज के शोषित एवं पीड़ित वर्ग का देखा चित्र प्रस्तुत किया है। जैसे– "साथियों, यह आपकी लड़ाई है और इसे आपको ही लड़ना है, इसमें बिचौलियों, स्टंटबाजों का क्या काम? आपके साथ जो नाइंसाफी और गैरबराबरी हो रही है, यह तो काफी पुरानी समस्या है। फार्नेस की धूल, गर्मी, धुएँ की घुटन में आप सीझते हैं और प्रोमोशन और इंसेंटिव आपको नहीं, दूसरी ओर जो दतर के स्वच्छ परिवेश में पंखे के तले बैठते हैं, जिन्हें व्यावहारिक स्तर पर यह भी मालूम नहीं कि कितने धान से कितना चावल होता है, वही आप पर हुक्म चलाते हैं, उन्हीं का बँधा हुआ प्रोमोशन है, वे ठेकेदारों से मिलकर चाहे पूरा कारखाना कबाड़ बनाकर कलकत्ते–बम्बई के सेठों को बेच दें, मगर उनका समय–बँधा प्रोमोशन होता है, और आपका.....? ।"[5]

'राख' कहानी में समाज के जमींदार वर्ग का यथार्थ वर्णन प्रस्तुत किया है। जैसे– "कायदे से तो महतो को उस फूटी

अनुरूपी लेखक / संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- II, Issues-24, YEAR- April-June-2022

आँख का भी हरजाना देना चाहिए।"

"सच! हमने तो कभी सोचा भी नहीं कि...।" वही माँगने गया था जोखन कि महतो न डपट दिया, "भागता है कि नहीं!"

"काहे गुस्सा रहे हैं मालिक, हम कोई भीख या खैरात तो माँग नहीं रहे, मजूरी माँग रहे हैं, बकाया मजूरी।"

"पहले हमारे दस लीटर दूध का दाम और मन्दिर की 'शुद्धी' के हजार गिन दो फिर पैसे की बात करो। तुम लोगों के चलते दो दिन से पूजा नहीं हुई, भोग नहीं चढ़ा, दो दिन से निराहार हैं देवी।"

**"दो दिन से तो हम दोनों भी..."**

**"चोप! देवी–देवता से अपनी तुलना करता है बदजात।"[8]**

'तीस साल का सफरनामा' कहानी में समाज से जमींदार वर्ग का रेखाचित्र प्रस्तुत किया है। जैसे– "यह सड़क जिसे आप नक़्शे में नीली रेखा के रूप में देखेंगे, दरअसल याबुक के नीले निशान हैं जो उसकी पीठ पर उभरे हैं। पाँच मील की दूरी को छंगू मिसिर, रामधन लाल और उन जैसे कितने बड़े लोगों की ज़मीन बचाते हुए और उस जैसे कितनों की ज़मीन निगलते हुए सड़क साढ़े सात मील लम्बी हो जाती है। आम के सुरंगनुमां बागों से कुसुमपुर की प्रगति का उद्घोष करता हुआ नम्बरदार, सरपंच और सरजू पाण्डे के ट्रकों, ट्रैक्टरों का काफिला आपको पता है, कितनों के सीनों पर से रोज़ गुज़रता है! सुरजा की पन्द्रह बिस्सा ज़मीन सड़क ने निगल ली। सड़क की सुविधा पाकर जब नम्बरदार का गन्ना मिल में जाने लगा तो सुरजा किसान से पार्ट–टाइम खलासी हो गया उनका।"[7] कदर कहानी में समाज के श्रमिक वर्ग का जीवन्त चित्र प्रस्तुत किया है। जैसे– 'चप–चप, चप–चप' की आवाज! कुत्ते पी रहे हैं शिवलिंग पर चढ़ाया हुए दूध को। पीयो सालो! वहाँ अपने राम को दिन–रात गुलामी करने के बाद भी एक पाव दूध नहीं देते राय जी और यहाँ तुम्हारे पीने के लिए रोज़ सुबह एक लोटा दूध शिवलिंग पर ढाल आते हैं। किसकी चीज़ किसके पेट में जाती है। एक तकदीर तुम्हारी है, एक रामबली राय की। उनके नाम पर एक धुर भी खेत नहीं, लेकिन खलिहान भरा पड़ा है धान के बोझ से और जिनके नाम खेत है, उनके खलिहान में सियारिन रो रही है।"[8] 'भूखे रीछ' कहानी में समाज के श्रमिक वर्ग अत्यंत प्रासंगिक चित्र प्रस्तुत किया है। जैसे– "काग़ज मोड़कर गेटपास के पास जेब में रखता है और अब बिना खैनी खाए उसके मुँह में कड़वाहट घुल रही है.... ओह! अब तो वह बैलगाड़ी ठमकने लगी है मंज़िल पर पहुँचे बिना हीः ऊपरटैम की नकली टाँगें भर–भराकर गिरने लगी हैं। नये सरकुलर के मुताबिक अबसेण्टी छोड़कर दूसरा ऊपरटैम नहीं होगा। मज़दूर इधर–उधर जमा होकर बात करते हैं, यूनियन क्या करती है?... अजी मिली मार है मीली मार.....सुनने में आया है, साहबों का वेतन अप्रैल महिने से सौ–सौ रुपए और बढ़ गया है और हमारा ग्रेड तो ग्रेड, ऊपरटैम भी हज़म कर गए साले....! हमारा कोई माई–बाप नहीं है इस दुनिया में! सरकार भी उन्हीं लोगों की है, पुलिस और अदालत भी उन्हीं लोगों की, कानून भी उन्हीं लोगों का।"[9] भूखे रीछ' कहानी में समाज के दीन–दलित वर्ग पर कलम चलायी है। जैसे "आन्दोलन–वान्दोलन सब फालतू बातें हैं। साहब लोग कौन–सा आन्दोलन करते हैं? कित्ते पैसे पाते है! कित्ते ठाठ से रहते हैं। तीन–तीन बार पगार बढ़ चुकी है उनकी। ठेकेदारों से या इधर–उधर से जो खाते हैं तो अलग! इधर हम साले मजदूर इस्टराइक करते हैं, धरना देते हैं, कुत्तों की तरह छीना–झपटी करते हैं, ऊपरटैम, परमोसन, क्वार्टर के टुकड़ों पर दुम हिलाते हुए साहबों के पीछे–पीछे चलते हैं फिर भी पेट नहीं भरता!।"[10]

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि लेखक का मार्क्सवादी चिंतन आज के समाज का जीवन्त एवं यथार्थ चित्र है जो उसे वाणी प्रदान करता है।

## संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. संजीव की कथा यात्रा, पहला पड़ाव, पृ.35.
2. वही, पृ.63.
3. वही, पृ.175.176.
4. संजीव की कथा यात्रा, दूसरा पड़ाव, पृ.99.
5. वही, पृ.30.
6. संजीव की कथा यात्रा, तीसरा पड़ाव, पृ.304.
7. संजीव की कथा यात्रा, पहला पड़ाव, पृ.35.
8. संजीव की कथा यात्रा, दूसरा पड़ाव, पृ.169.
9. संजीव की कथा यात्रा, पहला पड़ाव, पृ.100.
10. वही, पृ.99.

*****